प्रातः क्लास 21/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं जिसके हम बच्चे हैं उनको सच्चा साहब भी कहते हैं। इसलिए आजकल तुम बच्चों को साहबजादे भी कहते हैं। सच के ऊपर भी एक पोरी है, सच्च खाना, सच्च पहनना..... भल यह तो मनुष्यों की बनाई हुई है; परन्तु यह बाप बैठ समझाते हैं। बच्चे जानते हैं ऊँच ते ऊँच बाप ही है। जिसकी बहुत महिमा है। जिसको रचयिता भी कहते हैं। अब यह तो समझाया गया है पहले–2 है बच्चों की रचना। बाप के बच्चे हैं ना। सभी आत्माएँ बाप के साथ ही रहते हैं। उनको कहा जाता है बाप का घर। स्वीट–होम। यह कोई होम नहीं है। बच्चों को मालूम है वह हमारा स्वीटेस्ट बाप है। स्वीट–होम है शान्तिधाम। फिर सतयुग में भी स्वीट–होम है; क्योंकि वहाँ घर में भी सुख–शांति रहती है। यहाँ घर में भी अशान्ति है तो दुनिया में भी अशान्ति है। घर में लौकिक माँ–बाप पास भी अशान्त हैं तो दुनिया में भी अशान्त है। वहाँ तो घर में भी शान्ति तो दुनिया में भी शान्ति रहती है। सतयुग को नई छोटी दुनिया कहेंगे। यह पुरानी दुनिया कितनी बड़ी है। बच्चों को ही यह नॉलेज मिलती है। बाहर वाले तो कुछ भी इन बातों को नहीं जानते। बाप बैठ समझाते हैं। सतयुग में आत्माएँ भल शरीरधारी हैं तो भी वहाँ सुख–शान्ति है। कोई हंगामा की बात ही नहीं; क्योंकि बेहद के बाप से शान्ति का वरसा मिला हुआ है। आशीर्वाद देते हैं ना पुत्रवान भव। आयुष्वान भव। यह कोई आशीर्वाद देते नहीं हैं। बाप से तो ऑटोमेटकली वरसा मिलता है। अभी तुम बच्चों को यह सभी बातें स्मृति में आई है। बाप ने स्मृति दिलाई है। जिस पारलौकिक बाप को भक्तिमार्ग में सभी याद करते हैं, सभी धर्म वाले याद करते हैं जब दुख की दुनिया होती है। यह है ही पतित पुरानी दुख की दुनिया। नई दुनिया में सुख होता है। अशान्ति का नाम नहीं। यहाँ है ही अशान्ति की दुनिया। अभी तुम बच्चों को तो पूरा गुणवान बनना है। नहीं तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। बाप के साथ धर्मराज भी है, हिसाब–किताब चुक्तू करने वाला। सभा बैठती है ना। सजाएँ तो जरूर मिलनी हैं पापों की। जो अच्छी रीति मेहनत करते हैं वह थोड़े ही सजा खावेंगे। पाप की सज़ा मिलती है जिसको कर्म–भोग कहा जाता है। यह तो रावण का पराया राज्य है। इसमें अपार दुख है। राम–राज्य में अपार सुख होते हैं। तुम समझाते तो बहुतों को हो, फिर कोई झट समझ जाते हैं, कोई देरी से समझते हैं। कम समझते हैं तो समझो इसने भक्ति देरी से की है। जिसने शुरू से भक्ति की है वह ज्ञान को भी जल्दी समझ लेंगे; क्योंकि उनको आगे नम्बर में जाना है। यह तो बच्चे समझ गये हैं कि वह है आत्माओं का स्वीट सायलेन्स होम। उस घर से हम यहाँ आये हैं। सायलेन्स, मूवी, टॉकी है ना। बच्चे ध्यान में जाते हैं तो सुनाते हैं वहाँ मूवी चलती है। उनका कोई ज्ञान मार्ग से ताल्लुक नहीं। बाप ने समझाया है मुख्य बात है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस। और कोई बात नहीं। बाप निराकार, बच्चे भी यानी आत्मा भी इस शरीर में निराकार है। और कोई बात ही नहीं उठती। गोद, भाकी आदि कुछ भी है नहीं। यह तो सिर्फ लव कशिश करते हैं; परन्तु वह भी दवा देना चाहिए। आत्मा का लव तो एक परमपिता परमात्मा के साथ ही है। शरीर तो सभी पतित हैं ना। तो पतित शरीर से लव हो न सके। भल आत्मा पावन बन जाती, परन्तु शरीर तो पतित है ना। इस पुरानी पतित दुनिया में शरीर पावन बनता ही नहीं। आत्मा को तो पावन यहाँ बनना है तब इस पुरानी दुनिया, पतित शरीरों का विनाश होगा। आत्मा तो अविनाशी है। आत्मा का काम है बेहद के बाप को याद करना, पावन बनना। आत्मा पवित्र है तो शरीर भी पवित्र चाहिए। वह मिलेगा नई दुनिया में। यह शरीर तो पावन हो न सके। यह है पतित पुराना। आत्मा भल पावन बन जाये, आत्मा को एक परमपिता परमात्मा साथ ही योग लगाना है। बस। भाकी आदि की बात ही नहीं। पतित शरीर को टच भी नहीं करना है। स्त्री हो चाहे मिट–मायट हो कोई को टच न करना है। यह आत्माओं से बाप बात करते हैं। समझने की बात है ना। शरीरों साथ लटके तो बहुत। सतयुग से लेकर कलियुग तक शरीरों के साथ ही लटके हो। भल वहाँ आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र है। वहाँ विकार में जाते ही नहीं। जिससे शरीर भी विकारी बने। आत्मा भी विकारी नहीं

बनती। कई बल्लभा चारी भी होते हैं टच करने नहीं देते। भल यह तो तुम समझते हो उन्हों की आत्मा कोई निर्विकारी नहीं होती है। वह एक बल्लभाचारी पंथ है, जो अपन को ऊँच कुल वाले समझते हैं। शरीर को भी टच करने नहीं देते। यह नहीं समझते कि हम अपवित्र विकारी हैं। यह शरीर तो भ्रष्टाचार से पैदा हुआ है ना। यह बातें बाप आकर समझाते हैं। आत्मा पावन बनती जाती है फिर शरीर भी बदली करना पड़े। पावन शरीर तो तब बने जब 5 तत्व भी पावन बनें। सतयुग में 5 तत्व भी पवित्र होते हैं तब शरीर भी पवित्र बनते हैं। देवताएँ पतित शरीर पर, पतित धरती पर पैर धरते ही नहीं। उन्हों की आत्मा और शरीर पावन होते हैं। इसलिए वे सतयुग में ही पैर धरते हैं। यह है पतित दुनिया। तो बाप मूल बात समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। आत्मा की बाप को पुकारती है। शरीर का लौकिक बाप होते भी फिर उस पारलौकिक बाप को याद करते हैं। वह है शारीरिक बाप। वह है अशारीरिक बाप। अशारीरिक बाप को भी याद जरूर करते हैं; क्योंकि उनसे ऐसा जरूर सुख मिला है जो याद करने बिगर रह नहीं सकते। भल इस समय तमोप्रधान बने हैं तो भी उस बाप को याद जरूर करते हैं; परन्तु यह फिर उल्टी शिक्षा मिली है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। तो मनुष्य मुँझ पड़ते हैं। और मनुष्य तो मनुष्य ही बनते हैं। मनुष्य कुत्ते–बिल्ले आदि तो बनती ही नहीं। यह सब हैं भूलें तो बाप ही आकर समझाते हैं। बाप आकर एक ही बार मन्मनाभव का महामंत्र देते हैं। उनका भी अर्थ चाहिए ना। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बस। यही धुन लगी रहे। जिससे ही तुम पावन बन सकेंगे। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में मनुष्यों ने जो कुछ शास्त्र आदि बनाई है, देवताओं को तो कुछ बनाना ही नहीं है। देवताओं को कोई ज्योतिषी आदि भी नहीं कहा जाता। वह तो देवताएँ ही हैं। और कोई नाम ही नहीं। देवी–देवताएँ हैं क्योंकि पवित्र हैं। अब बाप आकर फिर से तुमको ऐसा पवित्र बनाते हैं। सामने एम ऑबजेक्ट रख देते हैं। बुत बनाने वाले होते हैं ना। मनुष्य का सूरत देख झट उनका बुत बना देंगे। जैसे कि वह जीता–जागता सामने बैठा है। ऐसे बुत बनाते हैं। अभी बाप तुमको क्या बनाते हैं। वह तो जड़–बुत हो जाती। यहाँ बाप तुमको कहते हैं तुमको ऐसा ल0ना0 चैतन्या बनना है। कैसे बनेंगे? मानुष से देवता तुम इस पढ़ाई से और प्युरिटी से बनेंगे। यह स्कूल ही है मनुष्य से देवता बनने का। वह बुत बनाते हैं उसको आर्ट कहा जाता। हूबहू वही सिकल आदि बनाते हैं। इसमें हूबहू की तो बात ही नहीं। यह तो जड़–चित्र है। वहाँ तो तुम चेरल चैतन्य बनेंगे। 5 तत्व का चैतन्य शरीर होगा। यह तो जड़–चित्र मनुष्यों का बनाया हुआ है। हूबहू तो हो न सके; क्योंकि देवताओं का फोटो तो निकल न सके। समझो अर्जुन को चतुर्भुज का सा0 हुआ। फोटो थोड़े ही निकल सकता। वह तो अर्जुन ही जाने। कहेंगे हमने ऐसा दीदार किया। चित्र तो बना न सकेंगे। न खुद न और कोई बना सके। खुद ऐसा तब बनेंगे जब बाप से नॉलेज लेकर पूरी करेंगे तब हूबहू कल्प पहले मिसल बनेंगे। यह कैसा कुदरती वन्डरफुल ड्रामा है। बाप बैठ यह कुदरती बातें समझाते हैं। मनुष्यों को तो यह बातें ख्याल में भी नहीं रहती। उन्हों के आगे जाकर माथा टेकते हैं। समझते हैं यह राज्य करके गये हैं, कब? सो पता नहीं है। यह फिर कब आवेंगे वा क्या कुछ भी ख्यालात नहीं चलती। तुम तो जानते हो सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी जो होकर गये हैं वह हूबहू फिर से बनेंगे जरूर। इस नॉलेज से ही बनेंगे। वन्डर है ना। तो अब बाप समझाते हैं ऐसे पुरुषार्थ करने से तुम सो देवता बनेंगे। सतयुग में जो देवताएँ थे वही हूबहू फिर बनेंगे। एक्टविटी वही चलेगी जो सतयुग–त्रेता में चली है। कितना वन्डरफुल ज्ञान है। यह दिल में ठहरे भी तब जब दिल की सफाई हो। सभी की बुद्धि में यह बातें ठहर न सके। मेहनत चाहिए। मेहनत बिगर कोई फल थोड़े ही मिल सकता है। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं। भल ड्रामा अनुसार ही होता है; परन्तु पुरुषार्थ तो करना है ना। ऐसे थोड़े ही बैठ जावेंगे ड्रामा में होगा तो हम से पुरुषार्थ चलेगा। ऐसे भी जंगली ख्यालात वाले बहुत होते हैं। हमारी तकदीर में होगा तो पुरुषार्थ चलेगा। अरे पुरुषार्थ तो तुमको करना है ना। पुरुषार्थ और प्रारब्ध होती है। मनुष्य पूछते हैं ना पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध बड़ी? कहते हैं पुरुषार्थ बड़ा। अब बड़ी तो प्रारब्ध है ना; परन्तु पुरुषार्थ को रखा जाता है जिससे प्रारब्ध बनती है।

हर एक मनुष्य मात्र को पुरुषार्थ से ही सब कुछ मिलता है। कब ऐसे भी पत्थर बुद्धि हो पड़ते जो उल्टा उठा लेते हैं। समझा जाता है इनके तकदीर में न है। टूट पड़ते हैं। यहाँ बच्चों को कितना पुरुषार्थ कराते हैं। रात–दिन समझाते रहते हैं। अपनी कैरेक्टर्स जरूर सुधारनी है। नम्बरवन कैरेक्टर है पावन बनना। देवताएँ तो हैं ही पावन। फिर जब गिरते हैं, कैरेक्टर बिगड़ता है तो एकदम पतित बन जाते हैं। अभी तुम समझते हो हमारा तो ए वन कैरेक्टर था। फिर एकदम बिगड़ पड़ी है। सारा मदार है पवित्रता पर। इसमें ही डिफीकल्ट बहुत होती है। मनुष्य को आँखें बहुत धोखा देती हैं; क्योंकि रावण राज्य है ना। वहाँ तो आँखें धोखा देती ही नहीं। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल जाता है। इसलिए रीलिजन इज माइट कहा जाता है। सर्वशक्तिवान बाप ही आकर यह देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। भल करती तो सभी आत्मा है; परन्तु मनुष्य के रूप करेगी ना। वह बाप है ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर, प्यार का भी सागर। देवताओं से बिल्कुल इनकी महिमा न्यारी है। तो ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करेंगे। बाप की महिमा भी करते हैं, याद भी करते हैं। उनको ही नॉलेजफुल बीजरूप कहा जाता है। उनको सत–चित–आनन्द स्वरूप..... क्यों कहा जाता है? झाड़ का बीज है उनको भी मालूम तो है ना झाड़ का; परन्तु वह है जड़ बीज उनमें आत्मा जैसी जड़ है। आत्मा तो है, छोटी–बड़ी होती है; परन्तु जड़ है। मनुष्य में है चैतन्य आत्मा। वह है जड़ आत्मा। चैतन्य आत्मा को ज्ञान का सागर भी कहा जाता है। उनको नहीं कहा जाता। जड़ चीज़ भी छोटी बड़ी होती है तो जरूर आत्मा है; परन्तु बोल नहीं सकती। परम–आत्मा की कितनी महिमा है। परम–आत्मा माना परमात्मा की महिमा भी गाई जाती है। फिर उनको ईश्वर भगवान आदि कह देते हैं। असल नाम है परमपिता–परमात्मा। परम अर्थात् सुप्रीम। बड़े ते बड़ा ऊँच ते ऊँच। महिमा भी बड़ी भारी करते हैं। अभी दिन–प्रतिदिन महिमा भी कम होती जाती है; क्योंकि पहले बुद्धि रजो थी फिर बुद्धि रजो तमो बन जाती है। यह सभी बातें बाप आकर समझाते हैं। मैं हर 5000 वर्ष बाद आकर पुरानी दुनिया नई दुनिया बनाता हूँ। गायन भी है सतयुग आदि भी है सत्य होसी भी सत्य..... कोई–2 पोरी अच्छी बनाई हुई है; क्योंकि वह तो फिर भी इतने पतित नहीं हैं ना। पीछे आने वाले इतने पतित नहीं होते हैं। भारतवासी ही बहुत सतोप्रधान थे फिर बहुत जन्मों के अन्त में तमोप्रधान बने हैं। और धर्म स्थापक के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। वह न इतना समय तमोप्रधान बनते हैं न इतना तमोप्रधान बनना है। न बहुत सुख देखना है न बहुत दुख देखेंगे। सबसे जास्ती तमोप्रधान बुद्धि किसकी बनी है, जो पहले2 देवता थे। वही सब धर्मों से जास्ती गिरे हैं। भल भारत की महिमा करते हैं; क्योंकि बहुत पुराना है। विचार किया जाये तो इस समय भारत बहुत गिरा हुआ है। उत्थान और पतन भारत का ही होता है। अर्थात् देवता धर्म का है। यह बुद्धि से काम लेना है। हमने सुख भी बहुत देखें सतोप्रधान थे। फिर दुख भी बहुत देखें हैं क्योंकि तमोप्रधान हैं। मुख्य है ही 4 धर्म। डिटीज्म, इस्लामिज्म, बौद्धिज्म, क्रिश्चनिज्म। बाकी फिर इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम नहीं है तो धर्म ही छोड़ देते। वास्तव में सबसे मुख्य धर्म है यह। परन्तु अपने धर्म को भूल गये हैं। इसलिए मुस्लमान भी हिन्दुओं को काफिर कहते हैं। समझते हैं हिन्दुधर्म तो हो नहीं सकता। जो समझू सयाणे हैं वह समझते हैं उन्हों को अपने धर्म में ईमान नहीं है। नहीं तो भारत क्या था। अभी क्या बना है। बाप बैठ समझाते हैं बच्चे तुम क्या थे। सारी हिस्ट्री बैठ समझाते हैं। तुम देवताएँ थे आधा कल्प राज्य किया। फिर आधा कल्प रावण राज्य में तुम धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट बन गये हो। रावणराज्य तो पराया राज्य हो गया। वह तो ईश्वर ने राज्य स्थापन किया। यह रावण आया तुम आसुरी सम्प्रदाया बन गये। अभी फिर तुम दैवी सम्प्रदाय बन रहे हो। भगवानुवाच बाप कल्प2 तुम भारतवासियों को ही समझाते हैं। रावण का भी भारत में ही एफजी जलाते हैं। बाप ने समझाया है वह है आसुरी सम्प्रदाय। अंधे के औलाद अंधे। और यह है युधिष्टर के। बाप कहते हैं तुम मेरे हो ना। मैंने तुमको इस युद्ध के मैदान में खड़ा किया है 5 विकारों से

लड़ने लिए। जो देवी–देवता धर्म के थे वही अपन को हिन्दू कहते हैं। फिर देवता धर्म में जाना है। यह सैंपलिंग लगना भी वन्डर है। जो जिस–2 धर्म में चले गये हैं वह फिर पिछाड़ी में निकल अपने2 धर्म में आ जावेंगे। ट्रान्सफर होनी है। बाप सारा राज़ बैठ समझाते हैं। मुख्य बात तो है ही पतित से पावन होने की। तुम जानते हो हम पतित बने हैं। आत्मा को स्मृति आई है। हम बहुत सुखी थे फिर बहुत दुखी बने। यह बाप ने स्मृति दिलाई है। बाप बिगर और कोई स्मृति में ला न सके। बाप पूछते हैं बच्चे स्मृति आई है कि हम कौन थे? कल्प2 तुम बच्चों को ही पढ़ाने आता हूँ। फिर धर्म सभी नम्बरवार ही रिपीट होंगे। यह किसकी बुद्धि में नहीं बैठता। हम पूजते हैं देवताओं को तो जरूर देवता धर्म के ठहरे ना। अभी बाप समझाते हैं तुम कितने पतित बने हो इसलिए अपन को देवता कह न सके। धर्म का नाम ही बदली कर दिया है। भारत का भी नाम बदली कर हिन्दुस्तान कह दिया है। वास्तव में भारत का नाम बदल थोड़े ही सकता। यूरोप का नाम कब बदलता है क्या। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। मुख्य बड़ी ते बड़ी मेहनत है अपन को आत्मा समझ बाप को याद कर पावन बनने लिए। यह है मुख्य मेहनत। जो तुम से हो नहीं सकती है; क्योंकि तुम देह–अभिमान में रहते हो। भल अच्छे2 बच्चे समझाते बहुत अच्छा हैं; परन्तु बाप को याद करना, यह होता नहीं। देह–अभिमान में रहते हैं। इसलिए ज्ञान तलवार में जौहर भरता ही नहीं। योग से तुम पवित्र बनेंगे। इसमें कमी बहुतों की है। योग में रहे तब क्रिमनल आई बदली हो। अपन को आत्मा समझना बहुत ऊँची मंजिल है। प्रजा तो ढेर के ढेर बनते रहते हैं। संदेश पहुँचाना है ना। बेहद का बाप आया हुआ है। पुरानी दुनिया का विनाश कराये नई दुनिया की स्थापना करा रहे हैं। मौत सामने खड़ा है। आगे चल अखबार में भी पड़ेगा। कहेंगे बस विनाश अभी शुरू होगा। जैसे कि प्रलय होती है। प्रलय जलमई को कहा जाता है। इनमें ख्याल करो जलमई कितनी हो जाती है। कितने बड़े2 खण्ड हैं। सभी जलमई हो जावेंगे। छोटी2 वेट में क्या बन सकेगा। उनको पहुँचावेगा कौन। दूर2 में तो बड़े2 बिटारियाँ हैं। कोई2 आईलैंड बहुत बड़ी होती है। लाखों आदमशुमारी होती है। यह भारत फिर भी बच जाता है। भारत को अविनाशी खण्ड कहा जाता है। भारत की बहुत महिमा है। सभी समझेंगे बरोबर बाप भारत में ही आकर हम सभी की सद्गति करते हैं। बाप ही आकर जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। वह सिर्फ मुक्ति का ही समझाते हैं। बाप मुक्ति और जीवनमुक्ति का समझाते हैं। सन्यासी कब जीवनमुक्ति का रास्ता बता न सकें। तुम जानते हो हम जीवनमुक्ति में रहते हैं तो और सभी मुक्ति में रहते हैं। भक्तिमार्ग में कितनी बनावटी बातें बना दी हैं। जिनका कोई हिसाब–किताब ही नहीं। नहीं तो है पूरा आधा–2, आधा कल्प ब्रह्मा का दिन, आधा कल्प ब्रह्मा की रात। वह लोग कितना फर्क कर देते। इसको कहा जाता है भक्तिमार्ग का घोर–अंधियारा। बाप तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं; परन्तु कितनी की बुद्धि में बैठता ही नहीं।

यह है आसुरी जंगल। वह है ईश्वरीय बगीचा। फर्क है ना। आत्माएँ सभी डर्टी बन गई हैं। विकार को डर्टी कहा जाता है। ऐसे में ऐसे कुछ होगा ही नहीं। डर्टी पतित को कहा जाता है। नाम ही रखा हुआ है वैश्यालय। शिवालय के यह सिम्पुल खड़े हैं ना। तुम ऐसे बनने वाले हो। दैवीगुण धारण करते हो। जो दैवीगुण नहीं धारण करते हैं तो फिर पद भी ऐसा पाते हैं। सभी मालूम पड़ जाता है। अपने घराणे का और प्रजा का अच्छी रीति मालूम पड़ जाता है। साहूकार प्रजा कौन बनेंगे। नम्बरवन देवताएँ कौन बनेंगे समझ तो सकते हैं ना। तुमको सभी एक्युरेट सा0 होंगे। यह दास–दासियाँ प्रजा साहूकार होंगे। पिछाड़ी में सा0 की धुन होगी। जैसे पहले होती थी। महाराजा–महारानी बन पार्ट बजाते थे। आज वह हैं नहीं। एक–एक की दुर्गति की हिस्ट्री सुनो तो तुम वन्डर खाओ। बाप का बनकर फिर ऐसा दुर्गति को पाते हैं। जो बात मत पूछो। माया एकदम सारा हप कर देती है। बड़ी वन्डरफुल कहानियाँ हैं। माया एकदम गिराकर गंदा बना देती है। ड्रामा में यह भी पार्ट था। ऐसे बहुत ही वन्डरफुल पार्ट होनी है। इसमें बहुत खबरदारी चाहिए। बाप की याद से ही सहारा मिल सकती है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।